भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या *88
उत्तर देने की तारीख 29.07.2024

ललित कला अकादमी

***88. डॉ. गुम्मा तनुजा रानी :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार की ललित कला अकादमी के और अधिक क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित करने की योजना है क्योंकि वर्तमान में देशभर में ऐसे केवल छह केन्द्र हैं;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ग) देशभर में क्षेत्रीय जनजातीय संस्कृति, कला और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए किए गए अन्य प्रयासों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (ग) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

'ललित कला अकादमी' के संबंध में दिनांक 29 जुलाई, 2024 को डॉ. गुम्मा तनुजा रानी द्वारा पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *88 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): ललित कला अकादमी ने चेन्नई, कोलकाता, भुवनेश्वर, लखनऊ और गढ़ी में क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए हैं, जो तीन दशकों से अधिक समय से कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, अगरतला, अहमदाबाद और शिमला में स्टूडियो और गैलरी स्थान कार्यशील हैं। कर्नाटक सरकार ने धारवाड़ में एक नए क्षेत्रीय केंद्र के लिए भूमि आवंटित की है, जिसकी आधारशिला फरवरी, 2023 में रखी गई थी।

वर्तमान में, और अधिक क्षेत्रीय केंद्र स्थापित करने की कोई योजना नहीं है क्योंकि ललित कला अकादमी और अधिक संख्या में प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं के आयोजन के लिए कई राज्य सरकारों और राज्य अकादमियों के निकट समन्वयन में काम कर रही है।

(ग): संस्कृति मंत्रालय द्वारा अपने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों और साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी, सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केंद्र जैसे स्वायत्त निकायों और विभिन्न केंद्रीय क्षेत्र की स्कीमों के माध्यम से देश भर में जनजातीय संस्कृति, कला और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए गए हैं। इसकी प्रमुख पहलों में निम्नलिखित शामिल हैं:

(i) मंत्रालय अपने कुल केंद्रीय क्षेत्र स्कीम आवंटन का 4.3 प्रतिशत वार्षिक रूप से जनजातीय कला, साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आवंटित करता है।

(ii) देश की लोक कला और संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने के अधिदेश के साथ क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए गए हैं। सातों जेडसीसी युक्तिपूर्ण ढंग से अवस्थित हैं ताकि पूरे देश को कवर किया जा सके। ये केंद्र राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (आरएसएम) आयोजित करते हैं, जहां कई लोक कलाकार अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए इनमें भाग लेते हैं। 'ट्राइफेड' के सहयोग से आयोजित आदि महोत्सव और सदस्य राज्यों में स्वतंत्र रूप से आयोजित आदि पर्व (जनजातीय मेले) जनजातीय संस्कृति को और बढ़ावा देते हैं। सभी सात जेडसीसी द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर का 'ऑक्टेव' महोत्सव पूर्वोत्तर क्षेत्र के कलाकारों और कारीगरों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने और प्रचारित करने के लिए समर्पित मंच प्रदान करता है।

(iii) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) ने पूर्वी भारत, विशेष रूप से झारखंड की जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलाओं के ज्ञान का अध्ययन, संरक्षण, परिरक्षण और प्रसार करने के लिए रांची में एक क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना की है। यह केंद्र

जनजातीय और पारंपरिक कारीगरों को विभिन्न कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अपने कार्य और कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

(iv) साहित्य अकादमी देश भर में जनजातीय साहित्य पर केंद्रित संगोष्ठियां, विचारगोष्ठियां और ऑनलाइन एवं ऑफलाइन, दोनों तरह के कार्यक्रम आयोजित करती है। इन कार्यक्रमों का आयोजन क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण प्रकाशन निकाले गए हैं। अकादमी ने विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं की आवश्यकताओं को पूरा करने, संबंधित कार्यकलापों का आयोजन करने और प्रकाशन निकालने के लिए अगरतला में नॉर्थ ईस्ट सेंटर फॉर ओरल लिटरेचर (एनईसीओएल) की भी स्थापना की है। समर्थित भाषाओं में मिज़ो, एओ, गारो, चकमा, राभा, कार्बी, ह्मार, लेप्चा, खासी, तांगखुल, मिसिंग, तेनीडीए, कोकबोरोक, जैंतिया, तुलु, गोजरी और हो भाषाएं शामिल हैं। साहित्य अकादमी अपने वार्षिक साहित्य महोत्सव के दौरान जनजातीय लेखक सम्मिलन भी आयोजित करती है, जिसमें 40-50 जनजातीय लेखक भाग लेते हैं।

(v) ललित कला अकादमी ने जनजातीय कलाकारों को उनकी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करते हुए देश भर में कई कला कार्यशालाएँ, शिविर और सम्मेलन आयोजित किए हैं। महत्वपूर्ण परियोजनाओं में नए संसद भवन की पीपल्स वॉल के लिए "जन जननी जन्मभूमि" कला कार्यशाला शामिल है, जिसमें विभिन्न जनजातीय पृष्ठभूमि की 75 से अधिक महिला कलाकार शामिल हैं। अकादमी ने जनजातीय और लोक कलाकारों को शामिल करते हुए विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र के लिए दिल्ली जैसे कई शहरों के सौंदर्यीकरण में भी योगदान दिया है। चेन्नई, भुवनेश्वर, लखनऊ और कोलकाता के क्षेत्रीय केंद्रों ने जनजातीय कला रूपों जैसे फड़, मधुबनी, गोंड, सौरा, पिथौरा, वारली और अन्य कला रूपों को बढ़ावा देते हुए कई जनजातीय कला शिविर और कार्यशालाएँ आयोजित की हैं।

(vi) सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) पूरे देश के स्कूलों में जनजातीय संस्कृति सहित भारतीय संस्कृति के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों सहित सभी क्षेत्रों के शिक्षक, सीसीआरटी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं जिनका प्रभाव जमीनी स्तर पर पड़ता है। ये कार्यक्रम शिक्षकों को क्षेत्रीय प्रस्तुति पर सत्रों के माध्यम से जनजातीय कला और संस्कृति सहित अपनी क्षेत्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

(vii) संगीत नाटक अकादमी, "पारंपरिक, लोक और जनजातीय मंच कलाओं का प्रशिक्षण और संरक्षण" योजना चलाती है, जो पारंपरिक मंच कलाओं से जुड़े संगीत वाद्ययंत्रों और शिल्पों के प्रशिक्षण, प्रदर्शन, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों के लिए सहायता करती है। यह

योजना गुरु-शिष्य परम्परा पर बल देती है और अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समर्थन करती है। अकादमी लोक और जनजातीय संगीत, नृत्य और रंगमंच को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में 'देशज' उत्सव भी आयोजित करती है।

आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में भारत की स्वतंत्रता में जनजातियों के विशेष योगदान के स्मरणोत्सव के रूप में बिरसा मुंडा की जयंती, 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया गया है। 2023 में अकाम अभियान के दौरान सबसे बड़ा जनजातीय लोक महोत्सव "उत्कर्ष" और जनजातीय खेल महोत्सव क्रमशः भोपाल और भुवनेश्वर में आयोजित किए गए।

जनजातीय कार्य मंत्रालय, जनजातीय लोगों के कल्याण और विकास के लिए नोडल मंत्रालय के रूप में जनजातीय संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों को संरक्षित और परिरक्षित करने हेतु विभिन्न उपाय करता है। इन उपायों में राज्यों में जनजातीय शोध संस्थान स्थापित करने, नृजातीय और जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय स्थापित करने, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय महोत्सव और कारीगर मेले आयोजित करने, शोध अध्ययन आयोजित करने एवं प्रकाशनों के साथ-साथ दृश्य-श्रृव्य वृत्तचित्र, जनजातीय व्यक्तियों और संस्थानों का क्षमता निर्माण करना और सूचना का प्रचार-प्रसार तथा जागरूकता उत्पन्न करना शामिल है।